12

''प्राण देने तक विश्वासी''

हमारा अधिकांश अध्ययन निर्णय लेने पर आधारित रहा है: यीशु पर भरोसा करने का निर्णय, मसीही बनने का निर्णय, काम और आराधना करने के बारे में निर्णय। इस प्रकार के निर्णय लेने के बाद, सबसे कठिन काम आता है: प्रतिदिन मसीही जीवन जीना।

अपने वर्तमान अध्ययन में मैं इस चुनौती की ओर केवल ध्यान ही दिला सकता हूं। नये नियम का अधिकांश भाग इस विषय पर आधारित है कि एक मसीही का जीवन कैसा होना चाहिए। एक मसीही अपने जीवन का काफ़ी समय यह सीखने में लगा देता है कि यीशु का अनुयायी होने के नाते उसका व्यवहार कैसा हो।

चुनौती

जो लोग बाइबल के बारे में अधिक नहीं जानते, वे भी इतना तो जानते ही हैं कि एक मसीही को अपने आस-पास के लोगों से अधिक धर्मी जीवन व्यतीत करना चाहिए। पौलुस ने कहा, ''और इस संसार के सदृश न बनो; परन्तु तुम्हारी बुद्धि के नये हो जाने से तुम्हारा चाल-चलन भी बदलता जाए'' (रोमियों 12:2क)। यीशु ने इस चुनौती को इन शब्दों में व्यक्त किया:

> तुम जगत की ज्योति हो; जो नगर पहाड़ पर बसा हुआ है वह छिप नहीं सकता। और लोग दिया जलाकर पैमाने के नीचे नहीं परन्तु दीवट पर रखते हैं, तब उससे घर के सब लोगों को प्रकाश पहुंचता है। उसी प्रकार तुम्हारा उजियाला मनुष्यों के साम्हने चमके कि वे तुम्हारे भले कामों को देखकर तुम्हारे पिता की, जो स्वर्ग में है, बड़ाई करें (मत्ती 5:14-16)।

गलतियों 5 में पौलुस ने नकारात्मक गुणों से दूर रहने और सकारात्मक विशेषताओं को अपने अन्दर बढ़ाने की सूची दी:

> शरीर के काम तो प्रकट हैं, अर्थात व्यभिचार, गंदे काम, लुचपन, मूर्तिपूजा, टोना, बैर, झगड़ा, ईर्ष्या, क्रोध, विरोध, फूट, विधर्म, डाह, मतवालापन, लीलाक्रीड़ा और इन के ऐसे और और काम हैं, इनके विषय में मैं तुम्हें पहिले से कह देता हूं, जैसा पहिले कह भी चुका हूं, कि ऐसे-ऐसे काम करने वाले परमेश्वर के राज्य के वारिस न होंगे। पर आत्मा का फल प्रेम, आनन्द, मेल, धीरज, कृपा, भलाई,

विश्वास, नम्रता, और संयम हैं; ऐसे-ऐसे कामों के विरोध में कोई भी व्यवस्था नहीं (गलतियों 5:19-23)।

क्या इसका अर्थ यह है कि आपको सिद्ध जीवन जीना होगा? नहीं, एकमात्र व्यक्ति जिसने सिद्ध जीवन जीया है, वह यीशु है। इसका अर्थ यह नहीं कि आपको यीशु के जैसा बनने का प्रयत्न नहीं करना चाहिए। आप जितने अच्छे बन सकते हैं, उतना आपको बनना चाहिए। पौलुस ने आज्ञा दी, ''अपने आप को परमेश्वर का ग्रहण योग्य ... ठहराने का *प्रयत्न कर* ...'' (2 तीमुथियुस 2:15)। लिखा है कि परमेश्वर ''अपने खोजने वालों को प्रतिफल देता है'' (इब्रानियों 11:6)[1]-''सिद्धता से खोजने वालों को,'' नहीं बल्कि ''अपने खोजने वालों को।''

वास्तविकता

दुर्भाग्यवश, कभी-कभी परमेश्वर के अनुयायियों का जीवन भी उस प्रकार का नहीं होता जैसा होना चाहिए। वे हमेशा वैसे नहीं होते जैसे वे हो सकते थे। बाइबल परमेश्वर के उन लोगों के उदाहरणों से भरी पड़ी है जिन्होंने पाप किया था-राजा दाऊद, जिसने व्यभिचार किया (2 शमूएल 11), से लेकर प्रेरित पतरस तक, जिसने अपने प्रभु का इन्कार किया (मत्ती 26:69-75)। यूहन्ना ने मसीहियों को लिखा, ''यदि [हम] कहें कि हमने पाप नहीं किया, तो उसे [परमेश्वर को] झूठा ठहराते हैं, और उसका वचन हम में नहीं है'' (1 यूहन्ना 1:10)। एक मसीही से जब पाप हो जाए तो उसे क्या करना चाहिए?

मन फिराए

उसे अपने पापों से मन फिराकर परमेश्वर से क्षमा मांगनी चाहिए। जब शमौन ने पाप किया तो पतरस ने कहा, ''इसलिए अपनी इस बुराई से मन फिराकर प्रभु से प्रार्थना कर, सम्भव है तेरे मन का विचार क्षमा किया जाए'' (प्रेरितों 8:22)। मन फिराव में इन्सान के लिए पिछली गलतियों को सुधारना उतना ही हो सकता है, जितना इन्सानी तौर पर सम्भव है।[2]

पाप का अंगीकार करे

मन फिराने में आवश्यक बात पाप को मानने की इच्छा होना है। एक मसीही के लिए अपने पापों का अंगीकार *परमेश्वर के सामने* करना आवश्यक है। यूहन्ना ने कहा, ''यदि हम अपने पापों को मान लें, तो वह हमारे पापों को क्षमा करने, और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने में विश्वास योग्य और धर्मी है'' (1 यूहन्ना 1:9)। कई बार उसे अपने पापों को *दूसरों* के सामने मानना आवश्यक होता है, विशेषकर उस स्थिति में जब दूसरों को उन पापों का पता हो या यदि उससे दूसरों को कष्ट होता हो। याकूब ने लिखा, ''इसलिए तुम आपस में एक दूसरे के साम्हने अपने-अपने पापों को मान लो;[3] और एक दूसरे के लिए प्रार्थना करो, जिससे चंगे हो जाओ'' (याकूब 5:16क)। सामान्य नियम के रूप में, पाप का अंगीकार

सार्वजनिक होना चाहिए।

प्रार्थना करे

जैसा कि हमने उद्धृत किए हुए पदों में देखा, प्रार्थना हर हाल में होनी चाहिए: एक *मसीही* के लिए प्रार्थना करनी आवश्यक है (प्रेरितों 8:22), और कभी-कभी उसे *दूसरों* को भी कहना चाहिए कि वे उसके लिए प्रार्थना करें (याकूब 5:16)।

आश्वासन

बाइबल में मेरी पसन्दीदा आयतों में से एक 1 यूहन्ना 1:7 है, जो कहती है कि ''यदि जैसा वह ज्योति में है, वैसे ही हम भी ज्योति में चलें, तो एक दूसरे से सहभागिता रखते हैं; और उसके पुत्र यीशु का लोहू हमें सब पापों से शुद्ध करता है।'' इस आयत में वर्तमान काल का उपयोग किया गया है, जो यूनानी में, निरन्तर क्रिया के लिए है। आयत मूलत: कहती है कि यदि मैं ज्योति में चलता *रहूं*, तो मसीह यीशु का लोहू मुझे मेरे पापों से शुद्ध करता *रहता* है।

यह एक रोमांचकारी सत्य है। बपतिस्मे के पानी से बाहर आने वाले के सभी पाप यीशु के लोहू के द्वारा (प्रकाशितवाक्य 1:5) धो दिए जाते हैं (प्रेरितों 22:16)। फिर, जब वह ''ज्योति में चलता है,'' तो यीशु का लोहू उसके पापों को धोता रहता है।

''ज्योति में चलें'' का क्या अर्थ है? ''ज्योति में चलना'' उस प्रकार से चलना है जैसे परमेश्वर चाहता है कि उसके बच्चे चलें।[4] इसका अर्थ यह नहीं है कि कलीसिया के सदस्य सिद्ध हो गए, क्योंकि फिर तो उनके पापों के शुद्ध होने की आवश्यकता ही नहीं होगी। मुख्य शब्द है ''चलना।'' एक मसीही का चलना उसकी जीवन शैली है। उद्धार पाने की चाह रखने वाले के लिए मसीही जीवन शैली अपनानी आवश्यक है।

जो कोई प्रकाश में चल रहा है, वह सम्पूर्ण नहीं है, परन्तु उसका मन परमेश्वर की ओर लगा हुआ है। वह उसकी इच्छा को पूरा करने के लिए वचनबद्ध है। वह मसीही पथ पर ठोकर खा सकता है; परन्तु वह ठोकर खाने पर मन फिराएगा, अंगीकार करेगा, और प्रार्थना करेगा। फिर वह अपने आप को ऊपर उठाएगा और परमेश्वर के साथ अपनी यात्रा को फिर से जारी रखेगा।

प्रतिज्ञा

कोई भी व्यक्ति मसीही जीवन को अपने दम पर नहीं जी सकता, इसलिए परमेश्वर ने उसकी सहायता करने की प्रतिज्ञा की है (प्रेरितों 2:38; रोमियों 8:13, 26)। प्रभु पर निर्भर रहने वाले के लिए यह प्रतिज्ञा है:

> हे बालको, तुम परमेश्वर के हो: और तुम ने ... जय पाई है; क्योंकि जो तुम में है, वह उससे जो संसार में है, बड़ा है (1 यूहन्ना 4:4)।

क्योंकि जो कुछ परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है, वह संसार पर जय प्राप्त करता है, और वह विजय जिससे संसार पर जय प्राप्त होती है, हमारा विश्वास है (1 यूहन्ना 5:4)।

यीशु ने यह चुनौती और प्रतिज्ञा दी: ''प्राण देने तक विश्वासी रह; तो मैं तुझे जीवन का मुकुट दूंगा'' (प्रकाशितवाक्य 2:10ख)। यहां ''मुकुट'' विजय के मुकुट को कहा गया है। ''जीवन का मुकुट'' वह मुकुट है जिसमें जीवन, अर्थात अनन्त जीवन है।

इस अध्ययन के आरम्भ में हमने अपने उद्देश्य को इस प्रकार परिभाषित किया था:

लक्ष्य: अनन्त जीवन

यीशु ने प्रतिज्ञा की कि यदि हम मृत्यु तक उसमें विश्वास करते रहें, तो वह हमें अनन्त जीवन देगा। इस प्रकार हमारा लक्ष्य पूरा हो जाएगा।

सारांश

हम लगभग अपने अध्ययन के समापन पर हैं। अब समय है कि आप इसे व्यक्तिगत रूप से प्रासंगिक बनाएं। क्या आप अनन्त जीवन पाना चाहते हैं? क्या आपकी इतनी अधिक इच्छा है कि आप प्रभु को अपना जीवन समर्पित करना चाहते हैं? क्या आप प्राण देने तक विश्वासी होने के इच्छुक हैं?

पाद टिप्पणियां

[1]हिन्दी बाइबल में केवल ''खोजने वालों'' को है, परन्तु अनुवादित शब्द ''खोजने'' का यूनानी शब्द संकेत देता है कि आधे मन से खोजने पर कुछ नहीं बनेगा; यह खोज *सच्चे मन व सच्ची लगन* से होनी चाहिए। [2]आपको चाहिए कि इस पुस्तक के पाठ 3 में पश्चात्ताप की शिक्षा पर पुनर्विचार करें। [3]यह किसी धार्मिक अधिकारी के सामने ''कन्फैशनल बॉक्स'' में अपने पापों का अंगीकार करना नहीं है। यह मसीही लोगों का *आपस में* एक दूसरे के सामने अंगीकार है। [4]''परमेश्वर ज्योति है'' (1 यूहन्ना 1:5), सो ''ज्योति में चलना'' परमेश्वर के साथ चलना है। यीशु ''जगत की ज्योति'' है (यूहन्ना 8:12), सो ''ज्योति में चलना'' यीशु के साथ चलना है। परमेश्वर का वचन उजियाला देता है (भजन संहिता 119:105), सो ''उजियाले में चलना'' परमेश्वर के वचन के अनुसार चलना है।